चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....Times of India.....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या.....5.....कॉलम.....4-8.....

HAU scientists develop high-yielding variety of moong

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: Scientists at the Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), Hisar have developed a new high-yielding disease-resistant variety of moong (green gram), MH 1142.

HAU vice chancellor Prof Samar Singh said, "This variety has been notified for cultivation during the kharif season in north-west and north-east plain zones of India, comprising the states of Uttar Pradesh, Punjab, Haryana, Delhi, Rajasthan, Uttrakhand, Bihar, Jharkhand, West Bengal and Assam."

Elaborating on the qualities of MH 1142, HAU director of research S K Sehrawat said this variety — which gives an average yield of 12 quintal/ hectare and has potential to yield up to 20 q/ha — matured in 63-70 days across different states.

"It is resistant to moongbean yellow mosaic virus, urdbean leaf crinkle virus and leaf curl virus and moderately resistant to anthracnose and powdery mildew diseases. Whitefly, thrips, pod bugs and pod borers' attack is also lesser in this variety," Sehrawat said.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Top Story (Online)	**10.09.2020**	--	--

HAU developed high yielding disease resistant Mungbean variety

TSN/Chandigarh:

Now the farmers of Uttar Pradesh, Punjab, Haryana, Delhi, Rajasthan, Uttrakhand, Bihar, Jharkhand, West Bengal and Assam will have a new high yielding disease resistant Mungbean variety .

The scientists of Pulses Section, Deptt. of Genetics & Plant Breeding, CCS HAU, Hisar with their strenuous efforts have brought laurels to the university by developing a new high yielding disease resistant Mungbean variety MH 1142. A spokesperson of the university today divulged that this variety was released and notified by the Central Sub-Committee on Crop Standards, Notification and Release of Varieties for Agricultural crops, Deptt. of Agriculture & Cooperation, Ministry of Agriculture & Farmers' Welfare, New Delhi in its 84th meeting held under the chairmanship of Dr. T.R. Sharma, DDG (Crop Science).

While congratulating the Mungbean team,Vice- Chancellor of the University, Prof. Samar Singh called upon the scientists for continued efforts in future also . He also appraised that the past untiring efforts of the scientists have paid good dividends in the form of development and release of six high yielding disease resistant varieties of Mungbean viz., Asha, Muskan, Sattya, Basanti, MH 421 and MH 318 for cultivation during different seasons in different agro-climatic conditions.

This new variety has been notified for cultivation during kharif season in North West and North East Plain zones of India comprising the states of Uttar Pradesh, Punjab, Haryana, Delhi, Rajasthan, Uttrakhand, Bihar, Jharkhand, West Bengal and Assam.

Elaborating the qualities of MH 1142, Dr. S.K. Sehrawat, Director of Research, said that it is a high yielding disease resistant variety which matures in 63-70 days across different states. It has semi-erect plants, light green foliage and determinate growth habit. Its pods are black and seeds are medium sized green and shiny.

It is resistant to Mungbean yellow mosaic virus, urdbean leaf crinkle virus and leaf curl virus and moderately resistant to anthracnose and powdery mildew diseases. Whitefly, thrips, pod bugs and pod borers attack is also lesser in this variety as compared to the earlier ones. It gives an average yield of 12 quintal/ha depending on the agro-ecological area and has potential of yielding up to 20 q/ha. This variety was developed by Dr. Rajesh Yadav, Dr. (Mrs.) Ravika, Dr. Naresh Kumar, Dr. P.K. Verma and Dr. A.K. Chhabra in collaboration with Dr. S.K. Sharma, Dr. A.S. Rathi, Dr. Tarun Verma and Dr. Roshan Lal.

Dr. A.K. Chhabra, Head, Deptt. of Genetics & Plant Breeding informed that the seed of this variety will be available to the farmers in the coming season.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... दैनिक जागरण ....

दिनांक 9.9.2020 पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....2-6....

सलाह

सघन बागवानी कर उत्पादन बढ़ा सकते हैं किसान, खरपतवारों पर भी किया जा सकता है नियंत्रण : प्रो. समर सिंह

सूक्ष्म सिंचाई से 60 फीसद पानी बचत कर सकते किसान

जागरण संवाददाता, हिसार : किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग कर 40 से 60 फीसद तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही।

कुलपति प्रो.समर सिंह। • जागरण आर्काइव

उन्होंने बताया कि महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय (एमएचयू) करनाल में तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन हो रहा है। जिसमें किसान उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक के बारे में जान रहे हैं। इसका आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत एमएचयू के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा किया गया है। जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डा. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की। प्रो. समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा, क्योंकि यहां से वह अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं।

खेत में की जा रही फव्वारा सिंचाई की प्रतीकात्मक तस्वीर। • विज्ञप्ति

इन फलों की दी गई जानकारी : वेबिनार में उपोष्ण कटिबंधीय फलों जैसे आम, लीची, अमरूद, अनार, किन्नू आदि की अग्रिम खेती, उचित प्रबंधन, फलों का तुड़ाई के बाद संरक्षण एवं रख-रखाव संबंधी आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस वेबिनार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के बागवानी विभाग के कृषि विज्ञानी भी शामिल हुए।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं ने लिया हिस्सा

इस वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय-लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर (बिहार) एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों ने किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। इसके अलावा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के विज्ञानी डा. गुरदेग सिंह, बागवानी विभाग के उपनिदेशक डा. आत्म प्रकाश एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डा. पन्नू एवं प्रमुख विज्ञानी डा. विजय अरोड़ा ने किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी दी। इन्होंने आम, लीची, अमरूद, नींबू वर्गीय फलों जैसे किन्नू व अनार की उत्पादन तकनीक, पुराने सेनाइल बागों के लिए कार्यकलाप तकनीक एवं तुड़ाई उपरांत फलों का रखरखाव, ड्रिप सिंचाई एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बताया। प्रगतिशील किसान नरेंद्र सिंह चौहान गांव उचाना (करनाल) ने वेबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार साझा किए।

किसान परंपरागत के स्थान पर आधुनिक खेती करें: प्रो. समर सिंह ने बताया कि किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परंपरागत खेती की बजाय इसमें विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। हमारा देश दुनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 9.9.2020.....पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....3.5.....

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में कर सकते हैं 60 प्रतिशत तक पानी बचत

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का उपयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है।

यह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण

किसान सघन बागवानी से बढ़ा सकते हैं उत्पादन, तीन दिवसीय वेबिनार संपन्न

कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था। वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की।

फल-सब्जियां तुड़ाई के बाद 30-40 प्रतिशत होती है खराब किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परंपरागत खेती की बजाए खेती में विविधीकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। उन्होंने बताया कि हमारा देश पूरी दुनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है, लेकिन फलों व सब्जियों की तुड़ाई के उपरांत 30-40 प्रतिशत तक नुकसान सही रखरखाव न होने की वजह से होता है। फलों एवं सब्जियों के उचित भंडारण हेतु कोल्ड स्टोर एवं इनकी प्रोसेसिंग के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

बादाम और सेब की खेती कर रहे नरेंद्र सिंह

प्रगतिशील किसान नरेंद्र सिंह चौहान गांव उचाना (करनाल) ने वेबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि बादाम एवं सेब की कई किस्मों को अपने बाग में कुशलतापूर्वक लगाया है और वे अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करते रहते हैं। वेबिनार में उपोष्ण कटिबंधीय फलों जैसे आम, लीची, अमरूद, अनार, किन्नू आदि की अग्रिम खेती, उचित प्रबंधन, फलों का तुड़ाई के बाद संरक्षण एवं रखरखाव संबंधी आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। वेबिनार में एचएयू के कृष वैज्ञानिक भी शामिल हुए।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं ने लिया हिस्सा

वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तरप्रदेश), राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुज्जफरपुर (बिहार) एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों के किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर......
दिनांक ..9.9.2020.... पृष्ठ संख्या ...2, 4........ कॉलम ...7, 8, 8......

सूक्ष्म सिंचाई से करें पानी की बचत : प्रो. समर सिंह

'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' विषय पर 3 दिवसीय वैबिनार संपन्न

हिसार, 8 सितम्बर (ब्यूरो): किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे 3 दिवसीय ऑनलाइन वैबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था।

प्रो.समर सिंह ने कहा कि यह वैबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा, क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परम्परागत खेती की बजाए खेती में विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। इस वैबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों के किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इसके अलावा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. गुरदेग सिंह, बागवानी विभाग के उपनिदेशक डा. आत्म प्रकाश एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पन्नू एवं प्रमुख वैज्ञानिक डा. विजय अरोड़ा द्वारा आम, लीची, अमरूद, नींबू वर्गीय फलों जैसे किन्नू व अनार की उत्पादन तकनीक, पुराने सेनाइल बागों के लिए कार्यकलाप तकनीक एवं तुड़ाई उपरांत फलों का रखरखाव, ड्रिप सिंचाई एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रगतिशील किसान नरेन्द्र सिंह चौहान गांव उचाना (करनाल) ने वैबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार सांझा किए।

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत : प्रो. समर सिंह

हिसार | किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार एएचयू हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहें। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 1-6

उपलब्धि • नई किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिन में पककर तैयार हो जाती है, मौजेक, पत्ता झूरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग प्रतिरोधी है

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142, उत्तरी भारत में भी हो सकेगी प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक पैदावार

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित की है। उत्तरी भारत के विभिन्न स्थानों में प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक की पैदावार की जा सकेगी। इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें पीला मौजेक, पत्ता झूरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चुर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है।

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह और डायरेक्टर रिसर्च डॉ. एसके सहरावत ने एचएयू के फैकल्टी हाउस में प्रेस वार्ता में कहा कि मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया है।

मूंग की नई प्रजाति विकसित करने वाली टीम वीसी प्रो. समर सिंह के साथ।

ये होगी किस्म की खासियत

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 क्विंटल से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पीके वर्मा और एके छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एसके शर्मा, डॉ. एएस राठी, डॉ. तरूण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. एके छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....2.8.....

हकृवि के वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

प्रति हेक्टेयर 12 से 20 क्विंटल तक पैदावार होने का दावा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 विकसित की है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग ने विकसित किया है।

इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों इस उपलब्धि पर बधाई दी है। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की हैं।

मूंग की नई किस्म विकसित करने वाली टीम के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह व अन्य।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं और बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

उत्तर भारत के लिए की अनुमोदित

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

इन रोगों की प्रतिरोधी क्षमता

इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें पीला मौजेक, पत्ता झुरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चूर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त मूंग की इस किस्म में सफेद मक्खी व थ्रिप्स जैसे रस चूसक कीट एवं अन्य फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एमएच-1142 किस्म विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पीके वर्मा और एके छाबड़ा की लगभग 13 साल की मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एसके शर्मा, डॉ. एएस राठी, डॉ. तरुण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या..... 1 .....कॉलम..... 1-5 .....

मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एम.एच.-1142 विकसित

हकृवि की उपलब्धि : अब प्रति हैक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी पैदावार

हिसार, 9 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एम.एच. 1142 को विकसित कर एक और उपलब्धि हासिल की है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के तहत अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इसको भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एम.एच. 421 व एम.एच. 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

जानकारी देते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, साथ में मौजूद अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत व अन्य। (नारंग)

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एम.एच. 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, श्रीमति डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पी.के. वर्मा और ए.के. छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एस.के. शर्मा, डॉ. ए.एस. राठी, डॉ. तरूण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

अगले वर्ष से बीज होगा उपलब्ध : डॉ. ए.के. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एम.एच. 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

एकसाथ पक कर होती है तैयार

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं व बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 से 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आंकी गई है।

इन रोगों के प्रति होगी रोधक क्षमता

इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें पीला मौजेक, पत्ता झूरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चूर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त मूंग की इस किस्म में सफेद मक्खी व थ्रिप्स जैस, रस चूसक कीट एवं अन्य फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

मूंग खरीद के लिए बनाए खरीद केंद्र

सिवानी मंडी (पोपली): प्रदेश सरकार ने मूंग की खरीद के लिए खरीद केंद्रों की घोषणा कर दी है। मार्टकी कमेटी के पूर्व चेयरमैन अनिल झाझरिया ने बताया कि सरकार ने भिवानी में सर्वाधिक खरीद केंद्र स्थापित किए हैं। उन्होंने बताया कि यह खरीद हैफेड और हरियाणा वेयर कार्पोरेशन के तहत की जाएगी।

उन्होंने बताया कि सिवानी, तोशाम, लोहारू, भिवानी, जुई और बहल में यह केंद्र स्थापित किए गए हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 10.9.2020....पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....1-4.....

उपलब्धि

उत्तर भारत के राज्यों में इसको उगा सकेंगे, प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक पैदावार का दावा

हकृवि ने विकसित की मूंग की नई किस्म

जागरण संवाददाता, हिसार : रोगों से खराब हो रही मूंग की फसल को अब नई किस्म बचाएगी। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने मूंग की नई किस्म एमएच-1142 को विकसित कर लॉच कर दिया है। इस नई किस्म की वेरायटी में पुरानी किस्मों से रोग प्रतिरोध क्षमता ज्यादा है। उत्तर भारत के राज्यों में किसान इसको अगले साल से बीज मिलने के बाद उगा सकेंगे। यह बातें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कही। इस दौरान उन्होंने किस्म को लाने वाले विज्ञानियों को सम्मानित भी किया।

प्रो. समर ने बताया कि मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा 84वीं बैठक में अधिसूचित कर दिया है।

बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की थी। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञनियों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। इसके लिए कृषि विज्ञानी डा. राजेश यादव, डा. रविका, डा. नरेश कुमार, डा. पीके वर्मा और एके छाबड़ा ने मेहनत की। उपलब्धि को प्राप्त करने में डा. एसके शर्मा, डा. एएस राठी, डा. तरुण वर्मा, डा. रोशन लाल का भी योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के फैकल्टी क्लब में डॉ रविका को सम्मानित करते कुलपति प्रो. समर सिंह● जागरण

जलवायु के अनुसार विकसित

मूंग की नई किस्म को जलवायु के अनुसार विकसित गया है। पुरानी मूंग की किस्मों को कुछ राज्यों में ही उगाया जाता था। इसे उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इनमें हरियाणा के अलावा उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल व असम राज्य शामिल हैं। इन राज्यों में इस नई किस्म से 63 से 70 दिनों में फसल पाई जा सकेगी।

काले रंग की होगी हैं फलियां

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। प्रो. समर सिंह ने बताया कि इस किस्म की खास बात यह है कि पीला मौजेक, पत्ता झूरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चुर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......हरि: भूमि......

दिनांक 10: 9: 2020 पृष्ठ संख्या......4......कॉलम......2:5......

वैज्ञानिकों की 13 साल की मेहनत से नई किस्म की उत्पादन व प्रतिरोधक क्षमता अधिक, उत्पादन क्षमता भी 12 फीसद ज्यादा

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

कुलपति ने तैयार की गई मूंग की नई किस्म को लॉन्च करते हुए पत्रकार सम्मेलन में बताया कि इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उपमहानिदेशक डॉ. टीआर शर्मा ने की थी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित की। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए विकसित की गई है।

इस किस्म को इजाद करने में विवि वैज्ञानिकों को करीब 13 साल लगे हैं। इसकी खासियत यह है कि अब तक विकसित की गई मूंग की किस्मों के मुकाबले इसकी उत्पादन क्षमता उनसे 12 फीसद ज्यादा है। इसके अलावा कीटों से लड़ने में भी काफी कारगर है। खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, श्रीमति डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पीके वर्मा और एके छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। डॉ. एसके शर्मा, डॉ. एएस राठी, डॉ. तरुण वर्मा, डॉ. रोशन लाल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 10.9.2020...पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-5.....

एचएयू : 566 ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा, तीसरा चरण 12 और चौथा 16 सितंबर को

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया, जबकि तीसरे में 12 को और चौथे चरण में 16 सितंबर को परीक्षा होगी।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सैनिटाइज कराया गया और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सैनिटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक आयोजित की गई।

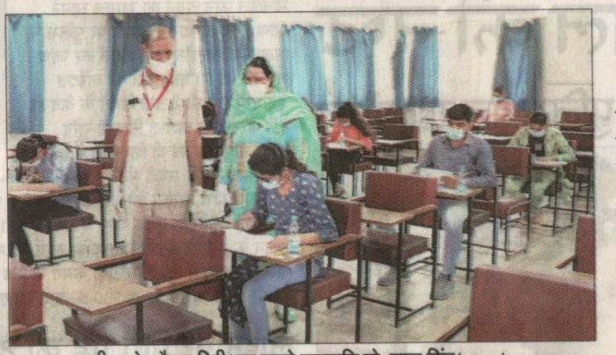

परीक्षा के दौरान निरीक्षण करते कुलपति प्रो. समर सिंह। संवाद

परीक्षा नियंत्रक डॉ. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पीएचडी के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एमएससी बेसिक साइंस (मेडिकल) व एमएससी (नॉन-मेडिकल) के उम्मीदवार थे। इसके लिए चार परीक्षा केंद्र बनाए गए थे, जिनमें कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल हैं।

कुलपति ने लिया जायजा : इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा लिया।

एचएयू में नए सत्र में रविवार सहित सभी छुट्टियां रद्द होंगी, सिलेबस नहीं होगा कम

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अन्य छुट्टियों के साथ-साथ अब रविवार की छुट्टियों को भी समाप्त किया जाएगा। कोरोना संकट के बीच खराब हुए समय के कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित हुई है और इससे नया सेमेस्टर शुरू करने में भी देरी होगी। ऐसे में विश्वविद्यालय प्रशासन ने नए सत्र की पढ़ाई की गुणवत्ता बनाए रखने और सही ढंग से पाठ्यक्रम पूरा करवाने को लेकर सभी तरह की छुट्टियों को रद्द करने की योजना बनाई है।

बुधवार को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने प्रेसवार्ता के दौरान यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम सिलेबस में किसी तरह का बदलाव नहीं करेंगे और न ही सिलेबस कम होगा। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को विश्व स्तर पर प्रतियोगिता करनी है, ऐसे में उनकी शिक्षा की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

वर्चुअल कक्षाओं पर रहेगा जोर : कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि कोरोना संकट के दौरान विद्यार्थियों की

कुलपति ने कहा- कोरोना संकट के कारण खराब हुए समय और देरी से शुरू हो रहे सत्र के कारण बनाई योजना

ऑनलाइन शिक्षा पर जोर रहेगा। कोशिश कर रहे हैं कि वर्चुअल कक्षाओं की संख्या को बढ़ाएं और विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास लगाते समय शिक्षक से सीधा संवाद कर सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के मोबाइल में इंटरनेट डाटा खत्म होने की बड़ी समस्या है। विवि इस संबंध में भी विचार कर रहा है और विद्यार्थियों को बेहतर विकल्पों के साथ पढ़ाई करवाई जाएगी।

अफगानिस्तान व अफ्रीकी देशों के विद्यार्थी कर रहे आवेदन : विवि में कोरोना संकट के दौरान भी अन्य देशों के विद्यार्थी भी आवेदन कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों में अफगानिस्तान और अफ्रीकी देशों के विद्यार्थियों की संख्या अधिक हैं। आपको बता दें कि विवि में करीब 19 देशों1ब 100 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक जागरण........

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....2-5....

कृषि विवि में 566 ने दी स्नातकोत्तर की परीक्षा, 457 परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल और नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। इसमें 1023 में से 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जा रहा है।

परीक्षा सुबह साढ़े 10 बजे से दोपहर साढ़े 12 बजे तक आयोजित की गई। जिसमें शारीरिक दूरी के साथ परीक्षार्थियों को मास्क व पानी की बोतल भी मुहैया कराई गई।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. बीआर कंबोज ने कहा कि परीक्षा केंद्र व राज्य सरकार की हिदायतों के अनुरूप कराई जा रही हैं। परीक्षा केंद्रों में कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल हैं।

3448 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन किया है आवेदन

परीक्षा नियंत्रक डा. एसके पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पीएचडी के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एमएससी बेसिक साइंस (मेडिकल) व एमएससी (नॉन-मेडिकल) के उम्मीदवार शामिल रहे।

परीक्षा कक्ष का निरीक्षण करते कुलपति प्रोफेसर समर सिंह • पीआरओ

अधिकारियों ने किया निरीक्षण

परीक्षा में शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गई। कुलपति प्रो. समर सिंह व कुलसचिव डा. बीआर कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा किया। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6, 9, 12 व 16 सितंबर तय की गई थीं।

दस्तावेजों का सत्यापन

6 सितंबर को प्रवेश परीक्षा देने वाले विद्यार्थी- 26 व 27 सितंबर को दस्तावेज सत्यापित करा सकते हैं

9 सितंबर को प्रवेश परीक्षा देने वाले विद्यार्थी- 29 व 30 सितंबर को दस्तावेज सत्यापित करा सकते हैं

पीएचडी पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी- 3 व 4 अक्टूबर को दस्तावेज सत्यापित करा सकते हैं

इस दिन परीक्षा परिणाम

- 6 व 9 सितंबर की प्रवेश परीक्षाओं का परिणाम- 22 सितंबर
- 12 व 16 सितंबर की प्रवेश परीक्षाओं का परिणाम- 27 सितंबर
- 22 को परिणाम आने पर 25 सितंबर तक उत्तीर्ण परीक्षार्थी ऑनलाइन विषय चयनित कर सकते हैं
- 27 को परिणाम आने के बाद 30 सितंबर विषय चयनित होगा

दो चरण बचे

12 सितंबर- पीएचडी (कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमिनिटी)

16 सितंबर- पीएचडी (कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर), पीएचडी, (कॉलेज ऑफ होम साइंस), पीएचडी (कॉलेज ऑफ फिशरीज साइंस), पीएचडी (कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी)

नोट- प्रवेश परीक्षा के अगले दिन उत्तर कुंजी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....पंजाब केसरी....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या....2.... कॉलम....6-8....

एच.ए.यू. में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

स्नातकोत्तर प्रोग्रामों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण, एम.एस.सी. बेसिक साइंस की मैडीकल व नॉन मैडीकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

हिसार, 9 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। इसमें 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को 4 चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितम्बर को आयोजित किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सैनिटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई।

दूसरे चरण में देनी थी 1023 उम्मीदवारों को परीक्षापरीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पी.एच.डी. के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एम.एस.सी. बेसिक साईंस (मैडीकल) व एम.एस.सी.(नॉन-मैडीकल) के उम्मीदवार थे। विद्यार्थियों की संख्या और केंद्र व राज्य सरकार की जारी हिदायतों को ध्यान में रखते हुए इन परीक्षाओं को आयोजित करवाने के लिए 4 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे, जिनमें कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल हैं। इन 4 केंद्रों पर 48 कमरे जिनमें हॉल भी शामिल हैं, निर्धारित किए गए थे, ताकि सामाजिक दूरी व सैनिटाइजेशन की पूरी तरह से पालना की जा सके।

कुलपति, कुलसचिव व प्रशासनिक अधिकारियों ने लिया जायजा इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गईं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रो. आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6, 9, 12 व 16 सितम्बर को तय की गई थीं, जिसका प्रथम चरण 6 सितम्बर को हो चुका है जबकि दूसरा चरण आज सम्पन्न हुआ।

प्रवेश परीक्षा के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते हुए व परीक्षा में बैठे परीक्षार्थी। (पंकेस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भूमि.....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या.....9.....कॉलम.....2-6.....

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा

■ स्नातकोत्तर प्रोग्रामों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया।

प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह तथा कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा लिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र तथा केंद्र सरकार की जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है।

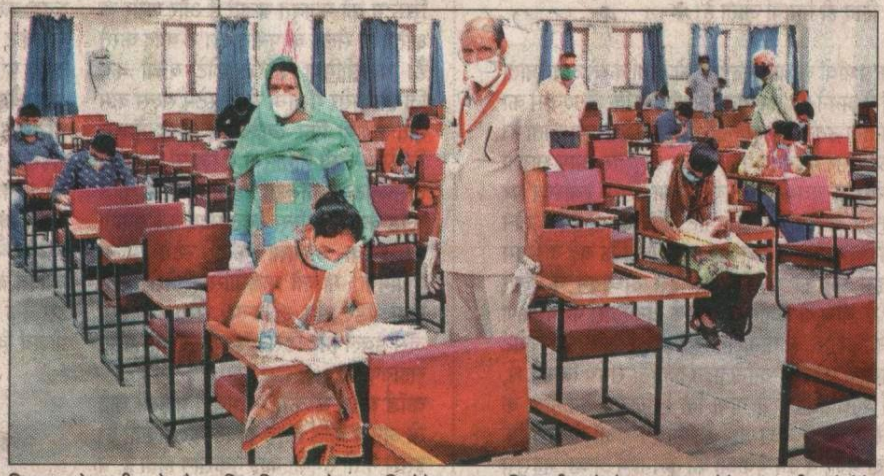

हिसार। प्रवेश परीक्षा के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते हुए व परीक्षा में बैठे परीक्षार्थी। फोटो: हरिभूमि

1023 को देनी थी परीक्षा

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर तथा पीएचडी के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एमएससी बेसिक साइंस (मेडिकल) तथा एमएससी (नॉन-मेडिकल) के उम्मीदवार थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....3-4.....

एचएयू में 566 ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा, 457 स्टूडेंट्स रहे अनुपस्थित

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। इसमें 566 परीक्षार्थी शामिल हुए तो 457 अनुपस्थित रहे।

एचएयू प्रशासन की तरफ से परीक्षाओं को चार चरण में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण बुधवार को आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. समर सिंह ने भी परीक्षा का जायजा लिया। एचएयू के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन कोरोना के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। सभी परीक्षार्थियों को विविं ने परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित

परीक्षा का जायजा लेते कुलपति प्रो समर सिंह।

की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज के अलावा विवि के प्रशासनिक अधिकारियों ने परीक्षाओं का जायजा लिया। बता दें कि परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पीएचडी के कोर्स शामिल हैं। दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक 10.9.2020....पृष्ठ संख्या....5....कॉलम....1-5....

खेतीबाड़ी • चौधरी चरण सिंह कृषि विवि हिसार ने जैव उर्वरक के विशेष प्रकार के टीके किए तैयार

जैव उर्वरक के प्रयोग से फसलों की उपज में होगी 15 फीसदी तक बढ़ोतरी, पर्यावरण भी प्रदूषित होने से बचेगा

महबूब अली | हिसार

खेती में लगातार रासायिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण मिट्टी की उत्पादक क्षमता जहां कम होती जा रही है वहीं पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है। यदि गेहूं से लेकर दाल, गन्ने, मक्का, बाजरा, टमाटर, प्याज सभी किसी भी फसल में जैव उर्वरक का प्रयोग किया जाएं तो फसल की उपज में 15 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी की जा सकती है। यहीं नहीं मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार के साथ-साथ पर्यावरण को भी प्रदूषित होने से बचाया जा सकेगा। हिसार के एचएयू स्थित जैव उर्वरक उत्पादन और प्रौद्योगिकी केंद्र प्रदेश के किसानों को लगातार जैव उर्वरक का फसलों में प्रयोग करने के प्रति जागरूक कर रहा है। इसके लिए केंद्र पर ही किसानों को ट्रेनिंग भी दी जा रही है। एचएयू ने जैव उर्वरक के विशेष प्रकार के टीके भी तैयार किए हैं। ऑनलाइन वेबिनार के माध्यम से अब किसानों को जैव उर्वरक के फसलों में प्रयोग की जानकारी दी जा रही है। किसानों का भी जागरूक होने के बाद जैव उर्वरक की तरफ रुझान बढ़ा है।

क्या है जैव उर्वरक

जैव उर्वरक उत्पादन के लिए लगाई मशीन।

जैव उर्वरक उत्पादन और प्रौद्योगिकी केंद्र के प्रभारी और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बलजीत सिंह सहारण और सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा के अनुसार आधुनिक कृषि रासायनिक उर्वरकों की आपूर्ति पर निर्भर है, जो दुर्लभ और अधिक महंगी होती जा रही है। रासायनिक उर्वरक पानी और वायु प्रदूषण के लिए भी प्रमुख एजेंट हैं। इस स्थिति ने फसल की खेती में जैव उर्वरक जैसे हानिरहित इनपुट की पहचान की है, जो न केवल रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने में मदद करता है। जैव उर्वरक के उपयोग के कारण फसलों की उपज में 5-15% की वृद्धि हो सकती है।

हर माह में एक हजार से अधिक किसान लेते हैं ट्रेनिंग

चौधरी चरण सिंह कृषि विवि हिसार का जैव उर्वरक उत्पादन ओर प्रौद्योगिकी केंद्र को जैव उत्पादकता उत्पादन के लिए राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। हर माह करीब एक हजार किसानों को केंद्र पर जैव उर्वरक के लिए ट्रेनिंग दी जाती है। केंद्र में हिसार के अलावा रोहतक, कैथल, फतेहाबाद, सिरसा, पानीपत, सोनीपत, करनाल, भिवानी, फरीदाबाद, गुरूग्राम, कुरुक्षेत्र के किसान भी जानकारी हासिल करते हैं।

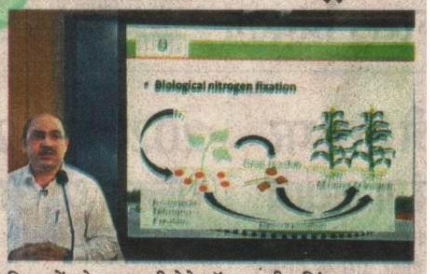

किसानों को जानकारी देते डॉ. बलजीत सिंह सहारण।

विभिन्न फसलों में जैव उर्वरक और उनका अनुप्रयोग

- राइजोबियम (राइज़ोटीका) – दालों के लिए।
- एजोटोबैक्टर (अज़ोटीका)- गेहूं, मक्का, कपास, सरसों और सब्जियां (आलू, प्याज, टमाटर, बैंगन और अन्य)।
- फोस्फोटीका (पी अस बी) – सभी फसलों के लिए एज़ोस्पिरिलम - अनाज की फसलें जैसे गेहूं, मक्का, बाजरा, शर्बत, जौ।
- ग्लूकोनोबैक्टर डायज़ोट्रोफिकस - गन्ने के लिए।

रोगों पर अंकुश लगाने में अहम भूमिका निभाते है सूक्ष्म जीव

सूक्ष्मजीव मिट्टी का एक अभिन्न हिस्सा हैं और मिट्टी और पौधे के स्वास्थ्य में योगदान करते हैं। सूक्ष्मजीवों में वायुमंडलीय नाइट्रोजन को निर्धारण करने, फॉस्फोरस को घोलने और जुटाने, प्रतिजैविक और रोग को दबाने वाले जैविक अणुओं का उत्पादन करने की क्षमता होती है। इन गुणों के कारण, वे कृषि में जैव उर्वरक और जैव कीटनाशकों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 10.1.2020 पृष्ठ संख्या 5 कॉलम 6.8

किसान वैज्ञानिक तरीके अपनाकर ले सकते हैं फसलों की अच्छी पैदावार

अच्छी पैदावार के लिए समस्या ग्रस्त मृदा का प्रबंधन जरूर करें किसान

राकेश कुमार | गढ़ी बीरबल

किसान सफल उत्पादन के लिए अच्छी मृदा व अच्छे पानी से सिंचाई की व्यवस्था करना बहुत आवश्यक है। अगर फसल समस्या ग्रस्त मृदा में लगाया जाती है तो फसल की पैदावार पर विपरित असर पड़ता है। किसानों को फसल की अधिक पैदावार लेने के लिए समस्या ग्रस्त मृदा का प्रबंधन जरूरी होता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र करनाल वरिष्ठ वैज्ञानिक विजय कुमार ने बताया कि ऐसी समस्या ग्रस्त भूमियों को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है। एक क्षारीय या उसर भूमि, दूसरी लवणीय भूमि। क्षारीय भूमि वह भूमि है जिसमें सोडियम कार्बोनेट, बाइकार्बोनेट तथा सलीकेट लवणों की अधिकता होती है। इसमें विनियम योग्य सोडियम 15 प्रतिशत से अधिक और पीएच मान 8.2 से अधिक होता है । विद्युत चालकता (ईसीई) 4 डैसी. प्रति मी.से कम होती है। इन मृदा में पानी व हवा का रिसाव कम हो जाता है । मिट्टी की भौतिक हालत बिगड़ जाती है।

लवणीय भूमि का सुधार

लवणीय भूमि ऐसी मृदा हैं जिनमें घुलनशील लवणों की अधिक मात्रा के कारण बीज का अंकुरण व विकास प्रभावित होता है। इस तरह की मृदा की विद्युत चालकता 4 डैसी. प्रति मीटर से अधिक तथा मृदा का पीएच मान 8.2 से कम तथा विनियम योग्य सोडियम की मात्रा 15 प्रतिशत से कम होती है। लवणीय भूमियों के सुधार के लिए भूमिगत जल निकास की आवश्यकता होती है। इसके लिए जमीन के अंदर छिद्रदार पाइप ले जाते हैं जो कि लवणों की निकासी में सहायता प्रदान करते हैं। इस तंत्र के लिए छिद्रदार पाईप भूमि की सतह से 1.5-2.0 मीटर गहराई और 60-67 मीटर के अंतराल पर बिछाए जाते हैं। इस कार्य के लिए ट्रैंचर मशीन का प्रयोग किया जाता है।

क्षारीय भूमि का सुधार

क्षारीय भूमि सुधारने के लिए विभिन्न रसायन जैसे जिप्सम, पाइराइट, फास्फोजिप्सम, गंधक का अम्ल का प्रयोग किया जाता है। फसल मिल का प्रेसमड, शीरा, धान का पुराल, धान की भूसी, तापीय विद्युत गृह की राख, जलकुंभी, कंपोस्ट खाद, गोबर की खाद कार्बनिक पदार्थों का प्रयोग भी उसर सुधार के लिए किया जाता है। जिप्सम के प्रयोग के लिए सर्वप्रथम खेत को समतल करके 45 सेंटीमीटर ऊंची मेढ़ बनाएं। जिप्सम की उचित मात्रा को खेत में डालकर 10 सेंटीमीटर तक जुताई करें। खेत में 10 से 15 दिनों तक अच्छा पानी भरकर रखें। इसके बाद धान की फसल लें। इस तरह की भूमि में सामान्य भूमि की अपेक्षा 25 प्रतिशत अधिक नाइट्रोजन तथा 25 किलो प्रति हैक्टेयर जिंक सल्फेट का प्रयोग करें।

ऐसी भूमियों में नाइट्रोजन, कैल्शियम तथा जिंक की कमी होती है। भूमि में समस्या किस तरह की है। इसके लिए मिट्टी की जांच करवाना जरूरी है। मिट्टी की जांच के लिए नमूना कैसे लेना है इसका ज्ञान होना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........
दिनांक 10. 9. 2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 4-6

तकनीक से प्रति एकड़ 8 नहीं 18 टन होगा लीची का उत्पादन

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र ने हेग्रो तकनीक की विकसित, डॉ. विशाल नाथ से विशेष बातचीत

एचएयू के वेबिनार में शामिल हुए राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर के डायरेक्टर

महबूब अली | हिसार

किसानों के लिए खुशखबरी है। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर ने बागवानी फसलों के लिए हेग्रो और माउंट पद्धति विकसित की है। दोनों पद्धतियों को अपनाकर हरियाणा, बिहार, पंजाब, यूपी के किसान प्रति एकड़ आठ नहीं 18 टन से भी अधिक लीची का उत्पादन कर सकते हैं। यहीं नहीं दोनों पद्धतियों से आम, अमरूद, आडू को भी उगाया जा सकता है। दोनों तकनीक के बारे में मंगलवार को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर के डायरेक्टर डॉ. विशाल नाथ ने एचएयू द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय वेबिनार के बाद भास्कर से बातचीत के दौरान जानकारी दी।

डॉ विशाल नाथ।

डायरेक्टर डॉ. विशाल नाथ ने बताया कि आज के समय में देखने में आ रहा है कि लोगों के पास खेतीबाड़ी की जमीन लगातार कम होती जा रही है। कम जमीन में अधिक उपज करना किसी चुनौती से कम नहीं है। बताया कि संस्थान द्वारा हेग्रो और माउंट पद्धति विकसित की गई है। जिसके माध्यम से किसानों को बागवानी करने पर कई गुणा फायदा होने वाला है। जलजमाव वाले क्षेत्रों में माउंट पद्धति से बाग लगाने की योजना जमीन पर आ चुकी है। इससे जलजमाव वाले क्षेत्र में यदि बीस दिन तक भी पानी है तो पौधा बर्बाद नही होगा। माउंट सिस्टम से मेड बनाकर लीची के पौधे लगाए जा सकते हैं। नए क्षेत्रों में संस्थान द्वारा विकसित नई तकनीक हेग्रो सिस्टम से लीची, आम, आडू, अमरूद के बाग लगाए जा सकते हैं। इससे उत्पादन का प्रति एकड़ औसत उत्पादन 8 टन से बढ़कर 18 टन पर पहुंच जाएगा। पुराने बागों का जीर्णोद्धार करा तीन वर्ष बाद ही दोगुना उत्पादन लेने के लिए भी तकनीकों तौर पर योजना पर काम चल रहा है। डायरेक्टर के अनुसार हेग्रो सिस्टम से 8 गुणा 4 मीटर पर लीची का पौधा लगाने से प्रत्येक एकड़ 40 की जगह 120 पौधे लग रहे हैं। इसके अलावा माउंट पद्धति के माध्यम से किसान चाहे तो मेड पर लीची लगाने के साथ-साथ छोटे तालाब बनाकर मछली पालन भी कर सकते हैं। हालांकि हरियाणा में अभी माउंट पद्धति के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

ट्रेनिंग के बाद अच्छी आमदनी का रास्ता खुल सकता है

डायरेक्टर डॉ. विशाल नाथ का कहना है कि हेग्रो, माउंट पद्धति के बारे में अभी किसानों को जानकारी नहीं है। इसके कारण कृषि से जुड़ाव रखने वाले युवा अपना ग्रुप बनाकर क्षेत्र में स्टार्टअप भी शुरू कर सकते हैं। लीची अनुसंधान केंद्र में कई युवाओं ने विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। ट्रेनिंग के बाद अच्छी आमदनी की जा सकती है। इसके अलावा लीची के पौधों के बीच हल्दी, अदरक जैसे छायादार फसलों की खेती से भी अधिक लाभ का रास्ता दिखेगा।

किसानों को नहीं होगी समस्या

हरियाणा के एचएयू समेत विभिन्न संस्थानों को हेग्रो तकनीक के बारे में जानकारी दी जा रही है। जल्द ही किसान भी तकनीक के बारे में जानकारी हासिल कर सकेंगे। प्रयास रहेगा कि किसानों को किसी भी तरह की परेशानी न होने दी जाए।

- डॉ. विशाल नाथ, डायरेक्टर, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर (बिहार)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 9.9.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 4-5

एचएयू : स्टूडेंट्स को डिग्री घर भेजने की तैयारी

हिसार | एचएयू के छात्रों के लिए राहत भरी खबर है। कोरोना से बचाव के मद्देनजर एचएयू प्रशासन विवि के छात्रों को उनके घर पर डिग्री पहुंचाने को लेकर तैयारी कर रहा है। इसके लिए कुलपति ने स्टाफ के अन्य सदस्यों से भी सुझाव मांगे हैं। विवि प्रशासन की बैठक में भी इसको लेकर निर्णय लिया जा सकता है।

दरअसल, कोरोना से बचाव के मद्देनजर सभी विवि बंद है। एचएयू में ऑफिशियल काम तो कराएं जा रहे हैं मगर छात्रों को विवि में एंट्री अभी नहीं है। ऑनलाइन ही पढ़ाई कराई जा रही है। डिग्री लेने के लिए छात्र एवं छात्राओं को विवि के चक्कर काटने को मजबूर होना पड़ता था मगर अब ऐसा नहीं होगा। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह का कहना है कि कोरोना से बचाव के मद्देनजर छात्रों के घर पर कोरियर या फिर स्टाफ के लोगों के माध्यम से डिग्री पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। इसके लिए विचार-विमर्श किया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..दैनिक भास्कर.....

दिनांक 10.9.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....6.8.....

एचएयू 1200 स्टूडेंट्स को देगा फ्री इंटरनेट सुविधा

पहल : विवि प्रशासन की बैठक में इस प्रस्ताव पर लग सकती है मुहर

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू स्टूडेंट्स के लिए खुशखबरी है। कोरोना वायरस से बचाव के मद्देनजर छात्रों की ऑनलाइन चल रही पढ़ाई के दौरान उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो, इसको देखते हुए एचएयू प्रशासन 1200 से अधिक छात्रों को इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय ले सकता है। अभी इस प्रस्ताव को लेकर विवि प्रशासन में विचार-विमर्श चल रहा है। विवि प्रशासन जल्द ही बैठक में प्रस्ताव पर मुहर लगा सकता है।

दरअसल, कोरोना से बचाव के मद्देनजर पिछले काफी समय से छात्र एवं छात्राओं की ऑनलाइन ही पढ़ाई चल रही है। उनका विवि में प्रवेश पूरी तरह से बंद है। हालांकि एचएयू में ऑफिसियल कार्य कराए जा रहे हैं। कुछ दिन पहले ही एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने छात्र एवं छात्राओं की ऑनलाइन चल रही पढ़ाई का जायजा लिया था। जिसमें उन्होंने पाया था कि कुछ छात्रों के पास इंटरनेट की कमी और कनेक्टिविटी सही नहीं होने के कारण उन्हें परेशानी हो रही है। हालांकि कुलपति ने प्रोफेसर को भी छात्रों की मदद के निर्देश दिए थे।

चूंकि अभी विवि प्रशासन कोरोना से बचाव के लिए छात्रों की ऑनलाइन पढ़ाई पर विचार-विमर्श कर रहा है। प्रो. समर सिंह ने बताया कि प्रयास है कि छात्रों को ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान परेशानी न होने दी जाएं। इसके लिए उन्हें मुफ्त इंटरनेट उपलब्ध कराया जा सकता है। इसके लिए कोई प्रस्ताव बना सकते हैं। हालांकि विवि प्रशासन की होने वाली बैठक में इस बारे में निर्णय लिया जाएगा।

एचएयू का बावल व कोल में भी है सेंटर: एचएयू के अधीन बावल और कोल में सेंटर हैं। एचएयू में एमएससी के विभिन्न कोर्स, पीएचडी, एमटेक, बीएससी, बीटेक के विभिन्न कोर्स आदि हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 10.9.2020.....पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....5-7.....

कोर्स में नहीं होगा बदलाव, रविवार को भी कक्षाएं लगा सकता है कृषि विवि

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन पाठ्यक्रम में परिवर्तन नहीं करेगा।

तय समय में पढ़ाई पूरी कराने के लिए रविवार के दिन भी कक्षा लगाने की तैयारी चल रही है। पहले यह चर्चा चल रही थी कि बीते समय की भरपाई के लिए पाठ्यक्रम में कटौती की जाएगी। कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय कई फेज में काम कर रहा है। आने वाले समय में पढ़ाई कराना एक बड़ी चुनौती है।

फैसला

- इंटरनेट कनेक्टिविटी और स्मार्ट क्लास जैसे संसाधन की बात हुई
- विद्यार्थियों को सॉफ्टवेयर से भेजेंगे पाठ्यक्रम से जुड़ी सामग्रियां

इसके लिए आधुनिक सॉफ्टवेयर, बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी व स्मार्ट क्लास जैसे संसाधनों को जुटाया जा रहा है। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से जुड़ी सामग्री भी सॉफ्टवेयर से भेजी जाएगी।

डाटा खपत कम करने का निकाला जा रहा रास्ता

विद्यार्थियों के सामने सबसे समस्या इंटरनेट के डाटा पैक की आ रही है। ऑनलाइन क्लास लगाते समय विद्यार्थियों का डाटा लगभग खत्म हो जाता है। इसकी काफी शिकायत विश्वविद्यालय प्रशासन के पास भी पहुंची है। अब विवि कोई तकनीकी रास्ता निकालने की कोशिश कर रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......हिसार टुडे.......

दिनांक 8.9.2020....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत : प्रो. समर सिंह

किसान सघन बागवानी से बढ़ा सकते हैं उत्पादन : कुलपति

- 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

टुडे न्यूज़ | हिसार

किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था। वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परम्परागत खेती की बजाए खेती में विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। उन्होंने बताया कि हमारा देश पूरी दुनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है, लेकिन फलों व सब्जियों की तुड़ाई के उपरांत 30-40 प्रतिशत तक नुकसान सही रखरखाव न होने की वजह से होता है। फलों एवं सब्जियों के उचित भंडारण हेतु कोल्ड स्टोर एवं इनकी प्रोसेसिंग के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

वेबिनार में कुलपति ने प्रतिभागियों के साथ रखे अपने विचार

इस वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर(बिहार) एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों के किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इसके अलावा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. गुरदेग सिंह, बागवानी विभाग के उपनिदेशक डा. आत्म प्रकाश एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पद्मू एवं प्रमुख वैज्ञानिक डा. विजय अरोड़ा द्वारा आम, लीची, अमरूद, नींबू वर्गीय फलों जैसे किन्नू व अनार की उत्पादन तकनीक, पूराने सेनाइल बागों के लिए कार्यकलाप तकनीक एवं तुड़ाई उपरांत फलों का रखरखाव, ड्रिप सिंचाई एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रगतिशील किसान नरेन्द्र सिंह चौहान गांव उचाना(करनाल) ने वेबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार सांझा किए। उन्होंने बताया कि बादाम एवं सेब की कई किस्मों को अपने बाग में कुशलतापूर्वक लगाया हुआ है और वे अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करते रहते हैं। वेबिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, कृषि वैज्ञानिक, देश व प्रदेश के प्रगतिशील किसान ऑनलाइन शामिल हुए। वेबिनार में उपोष्ण कटिबंधीय फलों जैसे आम, लीची, अमरूद, अनार, किन्नू आदि की अग्रिम खेती, उचित प्रबंधन, फलों का तुड़ाई के बाद संरक्षण एवं रख-रखाव संबंधी आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस वेबिनार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के बागवानी विभाग के कृषि वैज्ञानिक भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पल पल.....

दिनांक 8.9.2020....पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत: प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूज: हिसार, 8 सितम्बर। किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था। वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परम्परागत खेती की बजाए खेती में विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। उन्होंने बताया कि हमारा देश पूरी दूनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है, लेकिन फलों व सब्जियों की तुड़ाई के उपरांत 30-40 प्रतिशत तक नुकसान सही रखरखाव न होने की वजह से होता है। फलों एवं सब्जियों के उचित भंडारण हेतु कोल्ड स्टोर एवं इनकी प्रोसेसिंग के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....हैलो हिसार.....

दिनांक 8.9.2022....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

किसान सघन बागवानी से बढ़ा सकते हैं उत्पादन : कुलपति

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था। वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की।

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....नित्य शक्ति टाइम्स....

दिनांक ..8.9.2020.. पृष्ठ संख्या ...—... कॉलम ...—...

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत : प्रो. समर सिंह

वीसी बोले, किसान सघन बागवानी से बढ़ा सकते हैं उत्पादन

'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था।

वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की।

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परम्परागत खेती की बजाए खेती में विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है।

उन्होंने बताया कि हमारा देश पूरी दुनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है, लेकिन फलों व सब्जियों की तुड़ाई के उपरांत 30-40 प्रतिशत तक नुकसान सही रखरखाव न होने की वजह से होता है। फलों एवं सब्जियों के उचित भंडारण हेतु कोल्ड स्टोर एवं इनकी प्रोसेसिंग के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं ने लिया हिस्सा

इस वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर(बिहार) एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों के किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इसके अलावा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. गुरदेग सिंह, बागवानी विभाग के उपनिदेशक डा. आत्म प्रकाश एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पन्नू एवं प्रमुख वैज्ञानिक डा. विजय अरोड़ा द्वारा आम, लीची, अमरूद, नींबू वर्गीय फलों जैसे किन्नू व अनार की उत्पादन तकनीक, पूराने सेनाइल बागों के लिए कार्यकलाप तकनीक एवं तुड़ाई उपरांत फलों का रखरखाव, ड्रिप सिंचाई एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रगतिशील किसान नरेन्द्र सिंह चौहान गांव उचाना(करनाल) ने वेबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार सांझा किए। उन्होंने बताया कि बादाम एवं सेब की कई किस्मों को अपने बाग में कुशलतापूर्वक लगाया हुआ है और वे अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करते रहते हैं। वेबिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, कृषि वैज्ञानिक, देश व प्रदेश के प्रगतिशील किसान ऑनलाइन शामिल हुए। वेबिनार में उपोष्ण कटिबंधीय फलों जैसे आम, लीची, अमरूद, अनार, किन्नू आदि की अग्रिम खेती, उचित प्रबंधन, फलों का तुड़ाई के बाद संरक्षण एवं रख-रखाव संबंधी आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस वेबिनार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के बागवानी विभाग के कृषि वैज्ञानिक भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... पांच बजे ....

दिनांक 8.9.2020 पृष्ठ संख्या — कॉलम —

'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था।

वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. अजय यादव व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. विजय अरोड़ा ने संयुक्त रूप से की।

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह वेबिनार किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि यहां से किसान अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपने व्यवसाय को बेहतरीन तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं। किसान की आमदनी में बढ़ोतरी परम्परागत खेती की बजाए खेती में विविधिकरण व बागवानी के माध्यम से ही संभव हो सकती है। उन्होंने बताया कि हमारा देश पूरी दुनिया में फल उत्पादन में अग्रणी देशों में स्थान रखता है, लेकिन फलों व सब्जियों की तुड़ाई के उपरांत 30-40 प्रतिशत तक नुकसान सही रखरखाव न होने की वजह से होता है। फलों एवं सब्जियों के उचित भंडारण हेतु कोल्ड स्टोर एवं इनकी प्रोसेसिंग के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

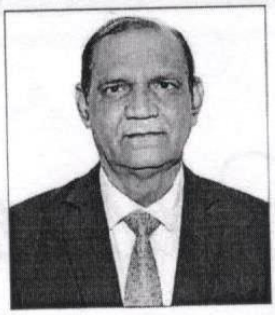

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं ने लिया हिस्सा

इस वेबिनार में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाएं केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र मुज्जफरपुर(बिहार) एवं राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, शोलापुर (महाराष्ट्र) के वैज्ञानिकों के किसानों को उपोष्ण कटिबंधीय फलों की बागवानी संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इसके अलावा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. गुरदेग सिंह, बागवानी विभाग के उपनिदेशक डा. आत्म प्रकाश एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. पन्नू एवं प्रमुख वैज्ञानिक डा. विजय अरोड़ा द्वारा आम, लीची, अमरूद, नींबू वर्गीय फलों जैसे किन्नू व अनार की उत्पादन तकनीक, पुराने सेनाइल बागों के लिए कार्यकलाप तकनीक एवं तुड़ाई उपरांत फलों का रखरखाव, ड्रिप सिंचाई एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

प्रगतिशील किसान नरेन्द्र सिंह चौहान गांव उचाना(करनाल) ने वेबिनार में शामिल प्रतिभागियों के साथ अपने बागवानी संबंधी विचार सांझा किए। उन्होंने बताया कि बादाम एवं सेब की कई किस्मों को अपने बाग में कुशलतापूर्वक लगाया हुआ है और वे अन्य किसानों को भी इस बारे में जागरूक करते रहते हैं। वेबिनार मे विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, कृषि वैज्ञानिक, देश व प्रदेश के प्रगतिशील किसान ऑनलाइन शामिल हुए। वेबिनार में उपोष्ण कटिबंधीय फलों जैसे आम, लीची, अमरूद, अनार, किन्नू आदि की अग्रिम खेती, उचित प्रबंधन, फलों का तुड़ाई के बाद संरक्षण एवं रख-रखाव संबंधी आधुनिक तकनीकों की महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस वेबिनार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के बागवानी विभाग के कृषि वैज्ञानिक भी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पुनित हरियाणा........

दिनांक 8.9.2020.......पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

सूक्ष्म सिंचाई से बागवानी में करें पानी की बचत : प्रोफेसर समर सिंह

September 8, 2020 • Rakesh • Haryana News

किसान सघन बागवानी से बढ़ा सकते हैं उत्पादन : कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार संपन्न

हिसार : 8 सितम्बर

किसान बागवानी में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करके 40 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत कर सकते हैं। साथ ही बागवानी में खरपतवारों पर भी नियंत्रण किया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार एवं महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल में आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन वेबिनार के दौरान बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय 'उपोष्ण कटिबंधीय फलों में आधुनिक उत्पादन तकनीक' था। वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल के विस्तार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम: हैलो हिसार

दिनांक: 8.9.2020 पृष्ठ संख्या: — कॉलम: —

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

हैलो हिसार न्यूज

हिसार :चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी।

प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी पैदावार

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....नित्य शक्ति टाइम्स.....

दिनांक 9.9.2020...पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी पैदावार

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकिसत कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित : खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

इन रोगों के प्रति होगी रोगरोधक क्षमता

इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें पीला मौजेक, पत्ता झुरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चुर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त मूंग की इस किस्म में सफेद मक्खी व थ्रिप्स जैस रस चूसक कीट एवं अन्य फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

यह है किस्म की खासियत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं व बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 क्विंटल से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, श्रीमति डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पी.के. वर्मा और ए.के. छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एस.के. शर्मा, डॉ. ए.एस. राठी, डॉ. तरूण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक ..9..9..2020..पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

उपलब्धि दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किस्म से प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी मूंग की पैदावार

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

हिसार। मूंग की नई किस्म विकसित करने वाली टीम के सदस्यों के साथ कुलपति व अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत।

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 क्विंटल से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, श्रीमति डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पी.के. वर्मा और ए.के. छाबड़ा की मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एस.के. शर्मा, डॉ. ए.एस. राठी, डॉ. तरूण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पाँच बजे........

दिनांक ..9.:..9.:.2022.....पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

प्रति हेक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी पैदावार

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्त्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

ये होगी किस्म की खासियत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं व बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 क्विंटल से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

इन रोगों के प्रति होगी रोगरोधक क्षमता

इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें पीला मौजेक, पत्ता झूरी, पत्ता मरोड़ जैसे विषाणु रोग तथा सफेद चुर्णी जैसे फफूंद रोगों की प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त मूंग की इस किस्म में सफेद मक्खी व थ्रिप्स जैस रस चूसक कीट एवं अन्य फली छेदक कीटों का प्रभाव भी पहले वाली किस्मों की तुलना में बहुत कम होगा।

किस्म विकसित करने में इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेश यादव, श्रीमति डॉ. रविका, डॉ. नरेश कुमार, डॉ. पी.के. वर्मा और ए.के. छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डॉ. एस.के. शर्मा, डॉ. ए.एस. राठी, डॉ. तरूण वर्मा व डॉ. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. ए.के. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि खरीफ के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 9.9.2020.....पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

कृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म

प्रति हैक्टेयर 20 क्विंटल तक होगी पैदावार : प्रो. समर सिंह

हिसार, 9 सितम्बर (राज पराशर) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकसित कर एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डा. टीआर शर्मा ने की थी।

हिसार : मूंग की नई किस्म विकसित करने वाली टीम के सदस्यों के साथ कुलपति प्रोफैसर समर सिंह व अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत। (छाया : राज पराशर)

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं।

खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है।

इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं व बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। मूंग की एमएच 1142 किस्म विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग के कृषि वैज्ञानिक डा. राजेश यादव, श्रीमति डा. रविका, डा. नरेश कुमार, डा. पी.के. वर्मा और ए.के. छाबड़ा की अथक मेहनत का परिणाम है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने में डा. एस.के. शर्मा, डा. ए.एस. राठी, डा. तरूण वर्मा व डा. रोशन लाल का भी विशेष योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पल पल.....

दिनांक 9.9.2022.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच-1142

पल पल न्यूज: हिसार, 9 सितम्बर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकिसत कर एक ओर उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मूंग की आशा, मुस्कान, सत्या, बसंती, एमएच 421 व एमएच 318 किस्में विकसित की जा चुकी हैं। खरीफ मौसम में बोई जाने वाली मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम व उत्तर-पूर्व के मैदानी इलाकों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल व असम राज्य शामिल हैं।

ये होगी किस्म की खासियत....

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि खरीफ में काश्त की जाने वाली मूंग की इस किस्म की खासियत यह है कि इसकी फसल एक साथ पककर तैयार होती है। इस किस्म की फलियां काले रंग की होती हैं व बीज मध्यम आकार के हरे व चमकीले होते हैं। इसका पौधा कम फैलावदार, सीधा एवं सीमित बढ़वार वाला है, जिससे इसकी कटाई आसान हो जाती है। यह किस्म विभिन्न राज्यों में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत पैदावार भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार 12 क्विंटल से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक आंकी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......जगमार्ग......

दिनांक 9. 9. 2020 पृष्ठ संख्या........ कॉलम........

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की मूंग की रोग प्रतिरोधी किस्म

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों ने इस वर्ष मूंग की नई रोग प्रतिरोधी किस्म एमएच 1142 को विकिसत कर एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय के नाम की है। मूंग की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महानिदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.......जगमार्ग.......

दिनांक ..9.9.2020.... पृष्ठ संख्या......—...... कॉलम......—......

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों नए दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

➡ एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

➡ स्नातकोत्तर प्रोग्रामों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण

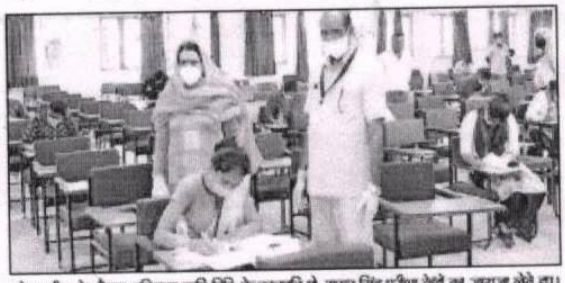

प्रवेश परीक्षा के दौरान हरियाणा कृषि विवि. के कुलपति प्रो. समर सिंह परीक्षा केंद्रों का जायजा लेते हुए।

जगमार्ग न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई थीं, जिसका प्रथम चरण 6 सितंबर को हो चुका है जबकि दूसरा चरण 9 सितंबर को सम्पन्न हुआ।

दूसरे चरण में देनी थी 1023 उम्मीदवारों को परीक्षा

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पी.एच.डी. के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एम.एस.सी. बेसिक साइंस (मेडिकल)व एम.एस.सी.(नॉन-मेडिकल)के उम्मीदवार थे। विद्यार्थियों की संख्या और केंद्र व राज्य सरकार की जारी हिदायतों को ध्यान में रखते हुए इन परीक्षाओं को आयोजित करवाने के लिए चार परीक्षा केंद्र बनाए गए थे, जिनमें कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल है। इन चार केंद्रों पर 48 कमरे जिनमें हॉल भी शामिल हैं, निर्धारित किए गए थे ताकि सामाजिक दूरी व सेनेटाइजेशन की पूरी तरह से पालना की जा सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....हैलो हिसार.....

दिनांक ..9..9..2020..पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

हैलो हिसार न्यूज

हिसार :चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई।

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

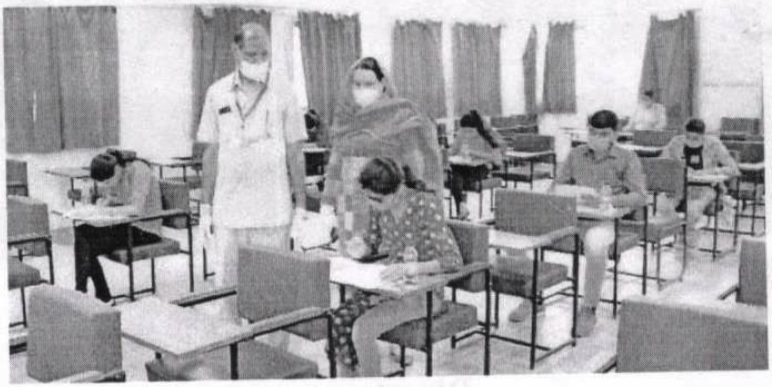

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक 9.9.2020.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नित्य शक्ति टाइम्स........

दिनांक 9.9.2020 ....पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

स्नातकोत्तर प्रोग्रामों में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण

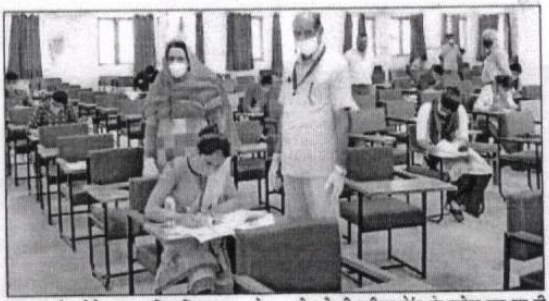

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई।

दूसरे चरण में देनी थी 1023 उम्मीदवारों को परीक्षा : परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पी.एच.डी. के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एम.एस.सी. बेसिक साईंस (मेडिकल)व एम.एस.सी.(नॉन-मेडिकल)के उम्मीदवार थे। विद्यार्थियों की संख्या और केंद्र व राज्य सरकार की जारी हिदायतों को ध्यान में रखते हुए इन परीक्षाओं को आयोजित करवाने के लिए चार परीक्षा केंद्र बनाए गए थे, जिनमें कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल हैं। इन चार केंद्रों पर 48 कमरे जिनमें हॉल भी शामिल हैं, निर्धारित किए गए थे ताकि सामाजिक दूरी व सेनेटाइजेशन की पूरी तरह से पालना की जा सके।

कुलपति व कुलसचिव ने लिया जायजा

इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई थीं, जिसका प्रथम चरण 6 सितंबर को हो चुका है जबकि दूसरा चरण 9 सितंबर को सम्पन्न हुआ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पांच बजे........

दिनांक ...9.9.2020... पृष्ठ संख्या.......—....... कॉलम.......—.......

एमएससी बेसिक साइंस की मेडिकल व नॉन मेडिकल स्ट्रीम के लिए हुई परीक्षा

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क

मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई।

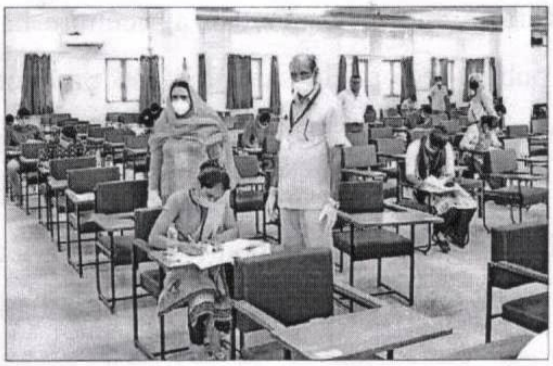

दूसरे चरण में देनी थी 1023 उम्मीदवारों को परीक्षा

परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया था, जिनमें स्नातकोत्तर व पी.एच.डी. के कोर्स शामिल हैं। परीक्षा के दूसरे चरण के लिए 1023 उम्मीदवारों को इस लिखित परीक्षा में शामिल होना था, जिनमें एम.एस.सी. बेसिक साईस (मेडिकल)व एम.एस.सी.(नॉन-मेडिकल)के उम्मीदवार थे। विद्यार्थियों की संख्या और केंद्र व राज्य सरकार की जारी हिदायतों को ध्यान में रखते हुए इन परीक्षाओं को आयोजित करवाने के लिए चार परीक्षा केंद्र बनाए गए थे, जिनमें कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय शामिल है। इन चार केंद्रों पर 48 कमरे जिनमें हॉल भी शामिल हैं, निर्धारित किए गए थे ताकि सामाजिक दूरी व सेनेटाइजेशन की पूरी तरह से पालना की जा सके।

कुलपति, कुलसचिव व प्रशासनिक अधिकारियों ने लिया जायजा

इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई थीं, जिसका प्रथम चरण 6 सितंबर को हो चुका है जबकि दूसरा चरण 9 सितंबर को सम्पन्न हुआ। उन्होंने उम्मदवारों व उनके अभिभावकों से अपील की है कि वे स्नातक व स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में दाखिला संबंधी नवीनतम जानकारियों के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट admissions.hau.ac.in and hau.ac.in पर चेक करते रहें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पल पल........

दिनांक ..9.9.202.. पृष्ठ संख्या..........-.......... कॉलम.......-......

एचएयू में 566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश परीक्षा

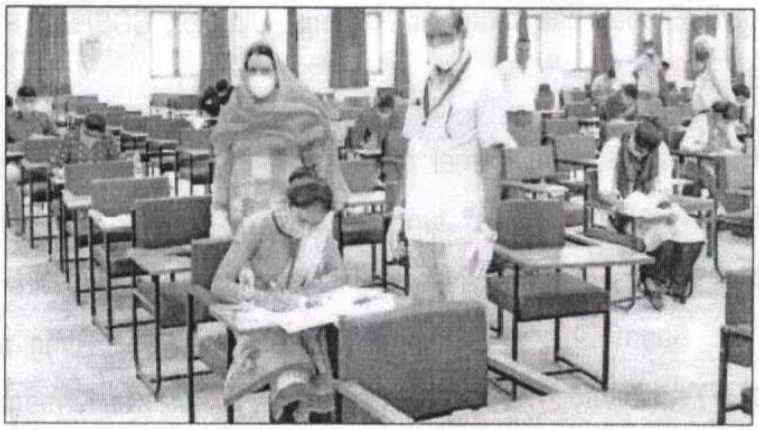

पल पल न्यूज: हिसार, 9 सितम्बर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया। प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितंबर को आयोजित किया गया। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके। परीक्षा सुबह 10 बजकर 30 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक आयोजित की गई। इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज के अलावा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा करते हुए चल रही परीक्षाओं का जायजा स्नातकोत्तर अधिष्ठाता प्रोफेसर आशा क्वात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से परीक्षा की तिथियां 6 सितम्बर, 9 सितम्बर, 12 सितम्बर व 16 सितम्बर को तय की गई थीं, जिसका प्रथम चरण 6 सितंबर को हो चुका है जबकि दूसरा चरण 9 सितंबर को सम्पन्न हुआ।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....अजीत समाचार....

दिनांक ..9..9..2020.. पृष्ठ संख्या ..—.. कॉलम ..—..

566 परीक्षार्थियों ने दी स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा

मंगाली, 9 सितम्बर (देवानन्द सोनी) : नलवा हलका स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन ने बुधवार को विभिन्न स्नातकोत्तर प्रोग्रामों के लिए प्रवेश परीक्षा का दूसरा चरण आयोजित किया।

प्रवेश परीक्षा में 566 परीक्षार्थी शामिल हुए, जबकि 457 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से परीक्षाओं को चार चरणों में आयोजित किया जाना है, जिसका दूसरा चरण 9 सितम्बर को आयोजित किया गया।

यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज ने बताया कि स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए परीक्षा का आयोजन कोरोना महामारी के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जारी हिदायतों का पालन करते हुए किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि सभी परीक्षा केंद्रों को परीक्षा से पहले सेनेटाइज कराया गया था और सामाजिक दूरी व मास्क का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इसके अलावा सभी परीक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की ओर से ही परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार पर ही हाथ सेनेटाइज करवाने के बाद पानी की बोतल व फेस मास्क मुहैया करवाए गए, ताकि किसी भी परीक्षार्थी को पानी के लिए अपने स्थान से उठना न पड़े और कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सतर्कता बरती जा सके।

परीक्षा सुबह 10:30 बजे से दोपहर 12: 30 बजे तक आयोजित की गई। परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि इन परीक्षाओं के लिए कुल 3448 ने विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया थाए जिनमें स्नातकोत्तर व पीएचडी के कोर्स शामिल हैं।

कुलपति कुलसचिव व प्रशासनिक अधिकारियों ने लिया जायजा इन परीक्षाओं को शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न करवाने व सभी हिदायतों की पालना करते हुए विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षक व गैर शिक्षक कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गईं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......समर घोष......

दिनांक 9.9.2020 पृष्ठ संख्या......—...... कॉलम......—......

एचएयू स्टूडेंट्स को दे सकता है फ्री इंटरनेट सुविधा

हिसार : कोरोना वायरस से बचाव के मद्देनजर छात्रों की ऑनलाइन चल रही पढ़ाई के दौरान उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो, इसको देखते हुए एचएयू प्रशासन 1200 से अधिक छात्रों को इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय ले सकता है। अभी इस प्रस्ताव को लेकर विवि प्रशासन में विचार-विमर्श चल रहा है।

आनलाईन चल रही पढ़ाई में आ रही बाधा को देखते हुए ले सकता है फैसला

कोरोना से बचाव के मद्देनजर पिछले काफी समय से छात्र एवं छात्राओं की ऑनलाइन ही पढ़ाई चल रही है। उनका विवि में प्रवेश पूरी तरह से बंद है। कुछ दिन पहले ही एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने छात्र एवं छात्राओं की ऑनलाइन चल रही पढ़ाई का जायजा लिया था। जिसमें उन्होंने पाया था कि कुछ छात्रों के पास इंटरनेट की कमी और कनेक्टिविटी सही नहीं होने के कारण उन्हें परेशानी हो रही है। हालांकि कुलपति ने प्रोफेसर को भी छात्रों की मदद के निर्देश दिए थे।